Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री काशी पञ्चक्रोशी देव-यात्रा

७५वाँ

कौस्तुभ-जयन्ती वर्ष

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥

"श्री दातार पञ्चक्रोशी मण्डल"

काशी

विक्रम संवत १९७८ ईसवी सन १९२२

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

॥श्रीः॥

यात्रा का महत्त्व

"जाना अथवा पहुँचना" इस अर्थवाले या धातु से ष्ट्रन् प्रत्यय करके टाप् करने पर यात्रा शब्द बनता है। जीव का संसार में आवागमन भी यात्रा ही है। यात्राएँ अनेक होती हैं, यथा वर-यात्रा, तीर्थ-यात्रा, देव-यात्रा आदि। भौतिक दृष्टि से यात्रा से स्वास्थ्य ठीक रहता है, पाचन शुद्ध होता है, रक्तप्रवाह तेज होकर बल-वृद्धि होती है। आधिदैविक दृष्टि से देवताओं की कृपा सिद्ध होती है तथा आध्यात्मिक दृष्टि से उपासना द्वारा पापक्षय होने से आत्मज्ञान सिद्ध होने की अनुकूलता बनती है। जिस प्रकार प्रदक्षिणा चतुरङ्ग होती है, मन में प्राप्य देवतीर्थ आदि का स्मरण, धीमे-धीमे पैदल चलकर देवतीर्थ आदि तक पहुँचना, मुख से नाम-सङ्कीर्तन तथा बुद्धि में आराध्य (देवता) के बारे में दृढ निश्चय करते हुए चलना।

प्रायः लोग शरीर अस्वस्थता के कारण यात्रा करने में असमर्थ होते हैं, परन्तु यात्रा करना ऐसा मुख्य उद्देश्य समझकर वाहन द्वारा यात्रा करते रहना भी उचित है। परन्तु पैदल-यात्रा का महत्त्व कुछ अधिक है।

यात्रा में शारीरिक शुचिता का ध्यान रखना चाहिए। आहार-विहार का संयम बरतना चाहिए। आर्थिक दृष्टि से भी शुचिता रखनी चाहिए। ऐसा करने से यात्रा सर्वाभीष्टप्रद होती है।

—डॉ० ज० ग० रटाटे
रीडर, संस्कृत-विभाग
कला-संकाय, का० हि० वि० वि०
वाराणसी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पञ्चक्रोशी यात्रा प्रारम्भ
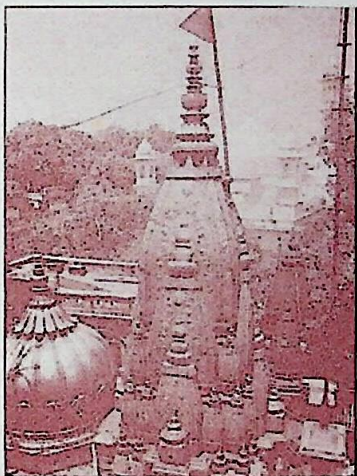
श्री काशी विश्वनाथ मन्दिर

प्रथम पड़ाव - कर्दमेश्वर महादेव मन्दिर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
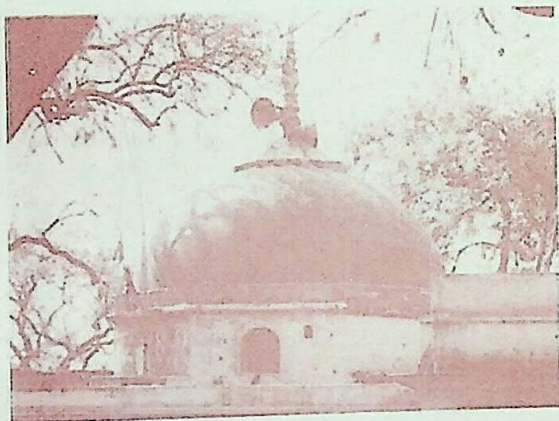
द्वितीय पड़ाव - भीमचण्डी देवी का मन्दिर

तृतीय पड़ाव - रामेश्वरम् महादेव मन्दिर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
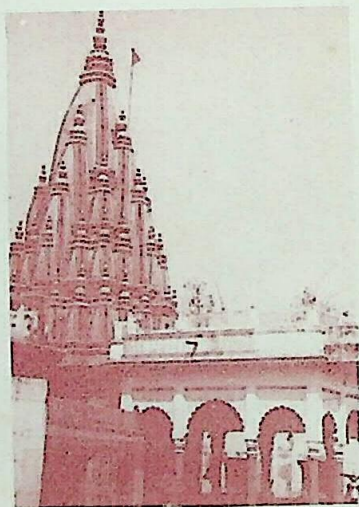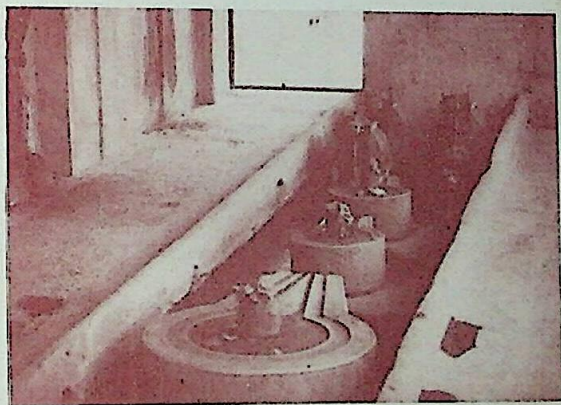
चतुर्थ पड़ाव - पाँचों पाण्डवों का मन्दिर
(शिवपुर)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पञ्चम पड़ाव - कपिलधारा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
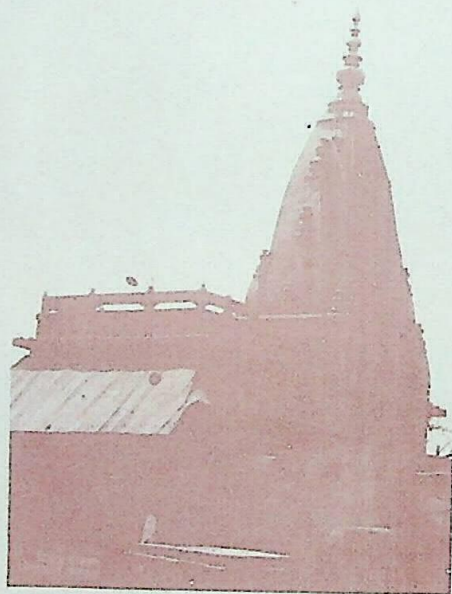
"श्री विश्वेश्वरो विजयते"
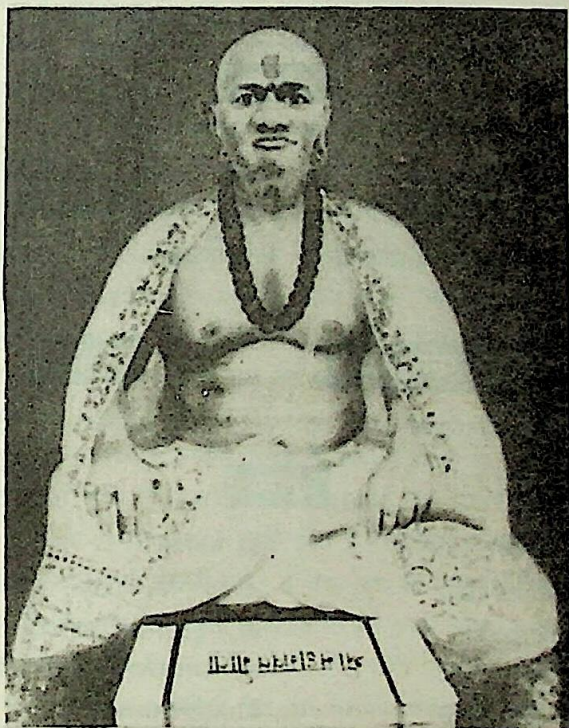
श्री दातार पञ्चक्रोशी मण्डल के संस्थापक
श्रीमद्भागवत-मार्तण्ड कैलाशवासी
प० प्र० श्री माधव बालशास्त्री दातार

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री दातार पञ्चक्रोशी मण्डल, वाराणसी की वर्तमान "प्रबन्ध-समिति"

संरक्षक

महामहोपाध्याय श्री प० विश्वनाथ शास्त्री दातार

निदेशक

श्री प० विश्वनाथ नारायण पालन्दे

अध्यक्ष

श्री प० वैकुण्ठनाथ उपाध्याय

उपाध्यक्ष

श्री केसरीनन्दन रस्तोगी
श्री केवलकृष्ण कपूर

मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष

श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा

उपमन्त्री

श्री केशवदास अग्रवाल

सदस्य

श्री सिद्धेश्वर दातार
श्री धनञ्जय दातार
श्री होरीलालजी
श्री रामशरण सेठ
श्री वासुदेव गोकर्ण
श्री मङ्गलनाथ सागरकर
श्री शिवाजीराव गणोरकर
श्री राजकुमार शर्मा
श्री भैयालाल
श्री छन्नूलाल पाठक
श्री सङ्कठाप्रसाद 'भइयेजी'
श्री विजयकृष्ण रस्तोगी 'बब्बूजी'
श्री राजाराम यादव
श्री हरेकृष्ण अग्रवाल 'गुड्डूजी'
श्री रामजी यादव
श्री रमेशकुमार

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मण्डल का संक्षिप्त परिचय

काशी पञ्चक्रोशी-यात्रा आदिकाल से चली आ रही है। इस यात्रा का क्रम, विधान आदि का विस्तार से वर्णन 'काशी-रहस्य' में वर्णित है। इस ग्रन्थ की एक प्रति को खोज निकालने का ८० वर्ष पूर्व काशी के महान् पौराणिक प्रातःस्मरणीय पण्डितप्रवर श्री माधव बालशास्त्री दातारजी के अथक प्रयास से हुआ।

इस ग्रन्थ का मनन कर श्री दातारजी आत्मावीरेश्वर के समीप अपने नित्य की कथा में प्रवचन करने लगे जिससे प्रेरित होकर आपके भक्तप्रवर काशी के खण्डेलवाल बन्धु श्री बद्रीप्रसादजी वं जगन्नाथ प्रसादजी, श्री बाँकेसाव, श्री दाऊजी अग्रवाल, श्री बदाऊ साव आदि ने ग्रन्थ के अनुसार यात्रा करने का निश्चय किया। फलस्वरूप ७५ वर्ष पूर्व 'श्री दातार पञ्चक्रोशी मण्डल' की आप लोगों ने स्थापना की तथा अपने गुरु श्री माधव बालशास्त्री दातारजी के साथ यात्रा प्रारम्भ की।

यह यात्रा प्रतिवार्षिक यात्रा के रूप में होली के दूसरे दिन अर्थात् चैत्र कृष्ण द्वितीया को प्रारम्भ कर छठे दिन समाप्त होती है।

काशी पञ्चक्रोशी-मार्ग पहले कच्चा एवं धूलभरा होता रहा, नंगे पाँव चलनेवालों को धूल में चलने में बड़ा सुख का अनुभव होता था। अब पक्की सड़क होने पर यात्रियों के पैर के तलवे कंकड़ व छर्री से कष्टदायी हो जाते हैं। मार्ग के दोनों ओर कच्ची जमीन पर यात्रियों को चलने में सुविधा होती है, पर उस पर भी सिटकी से कष्ट होता है। उसके लिए उन पर मिट्टी डाली जाय और उस पर घास उगने से नंगे पैर चलनेवालों के पैर में घाव आदि नहीं होंगे।

प्रत्येक विश्राम-स्थलों पर पूर्वजों ने बड़ी-बड़ी धर्मशालाएँ बनवा रखी हैं। उनकी देख-रेख, मन्दिरों व तीर्थों का जीर्णोद्धार-कार्य भी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मण्डल ने किये हैं। शिवपुर में द्रौपदीकुण्ड, कर्दमकूप (कँदवाँ), देहली विनायक मन्दिर का जीर्णोद्धार-कार्य श्री दातार पञ्चक्रोशी मण्डल ने अपने यात्रा-काल में किया है।

आस्तिक जनों में सात्त्विकता जागृत करने के उद्देश्य से ही देव-दर्शन, पूजन, तीर्थ-यात्रा आदि का उपक्रम वेद-शास्त्रों के आधार पर किया गया है। इसके द्वारा लोग स्वयं सात्त्विक वृत्तिवाले होते हैं और अपने परिवार के लोगों को दीक्षित करते हैं।

काशी पञ्चक्रोशी देव-यात्रा करने से काशी के देव-दर्शन, उनकी महिमा का ज्ञान, उनकी उपासना से पुण्य का अर्जन कर लोग अपना इहलोक व परलोक बनाते हैं। यात्रा से हम काशीक्षेत्र के देव-स्थानों, तीर्थों की सुरक्षा एक सजग प्रहरी की भाँति करते हैं।

आज काशी की अनेक यात्राएँ न होने के कारण आसुरी वृत्ति के लोग दिनदहाड़े उसके अस्तित्व को ही समाप्त करने पर तुले हैं।

पवित्र काशीपुरी की महिमा का घर-घर में प्रचार व मनन हो इस उद्देश्य से 'काशी पञ्चक्रोशी देव-यात्रा' नामक इस लघु रूप में पुस्तक का प्रकाशन मण्डल कर रहा है।

बड़े सन्तोष की बात है कि सात्त्विकता, धार्मिकता और आर्यत्व के धारक बाबा विश्वनाथ के प्रतीक महाराज काशी-नरेश-जी ने छः वर्ष पूर्व स्वयं पदयात्रा कर काशीवासियों को पञ्चक्रोशी-यात्रा के लिए प्रोत्साहित किया तथा श्री दातार पञ्चक्रोशी मण्डल की वार्षिक यात्रा में प्रत्येक विश्राम-स्थलों में अपराह्न ३ बजे अपने राजकुमार व राजकुमारियों के साथ पधारकर मण्डल के यात्रियों में यात्रा के निमित्त आस्था का संचार कर रहे हैं, यह मण्डल की सात्त्विकता व पूर्वपुरुषों के पुण्य का ही फल हम मानते हैं।

—वैकुण्ठनाथ उपाध्याय

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दो शब्द

प्रिय भक्तजन,

श्री दातार पञ्चक्रोशी मण्डल आज अपनी यात्रा का ७५वाँ वर्ष कौस्तुभ-जयन्ती के रूप में मनाता हुआ (पञ्चक्रोशी-देवयात्रा नाम की लघु पुस्तक प्रकाशित कर) यात्रा कर रहा है।

यात्राएँ तो अनादिकाल से चलती आ रही हैं और चलती ही रहेंगी, परन्तु यात्रा नियम, संयम एवं शास्त्रानुसार जनकल्याण हेतु चलती रहे – इस कार्य को प्रारम्भ करने का मुख्य श्रेय मण्डल के यात्राप्रवर्तक के रूप में कैलाशवासी प० प्रवर श्री माधव बालशास्त्री दातारजी रहे, जिन्होंने दातार पञ्चक्रोशी मण्डल की स्थापना कर आज हम सभी काशीवासियों के लिए बड़ा ही महत्त्वपूर्ण मार्ग दर्शाया है। परन्तु 'गतानुगतिको लोके' इस उक्ति के अनुसार उन्होंने इसी परम्परा को अपने ही कुलवंश के 'महामहोपाध्याय न्यायकेसरी' भागवत-मर्मज्ञ प० श्री विश्वनाथ शास्त्री दातारजी को इस यात्रा का भार सौंपा। श्री प० विश्वनाथ शास्त्री दातारजी ने भी यात्रा को सुचारु रूप से चलाते हुए सद्गुरु सदैव अपने भक्तों के कल्याण का मार्ग-दर्शन कराते रहते हैं इसी क्रम में पूज्य श्री दातार शास्त्रीजी ने भी अपना योग्य उत्तराधिकारी प० विश्वनाथ नारायण पालन्देजी को वर्ष १९८१ में इस यात्रा को परम्परागत चलाने का उत्तरदायित्व सौंप दिया।

श्री पालन्देजी भी त्याग, विद्वत्ता, स्नेह का समागम बनाकर निष्ठापूर्वक मण्डल की परम्परा का निर्वाह करा रहे हैं एवं यात्री मर्यादापूर्वक अनुशासन में रहते हुए यात्रा कर रहे हैं।

इस यात्रा के प्रति लगातार ४० वर्षों से प० श्री वैकुण्ठनाथ उपाध्यायजी का सहयोग बना हुआ है और इन्हींके प्रयास से ही विगत कई वर्षों से महाराज काशीनरेश डॉ० श्री विभूतिनारायणसिंहजी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भी अपने परिजनोंसहित कथा के समय हर विश्राम-स्थल पर पधार-कर यात्रियों का उत्साहवर्धन कर रहे हैं। महाराज काशीनरेश का यह कथन कि (हमारा परिवार इस यात्रा में सदैव सम्मिलित होता रहेगा) यह हमारे मण्डल के लिए गौरव की बात है।

मण्डल की यात्रा में दूर-दूर के प्रान्तों से यात्री महाराष्ट्र, राजस्थान, बंगाल, आसाम, बिहार, उत्तरप्रदेश से यात्रा करने के लिए निश्चित समय पर आने लगे हैं।

मण्डल अपने यात्रियों की हर प्रकार से सुविधा, साधन उपलब्ध कराकर यात्रियों की संख्या में निरन्तर वृद्धि कर रहा है।

हमें विश्वास है कि बाबा विश्वनाथ की कृपा से मण्डल इसी तरह यात्रा-सेवा-कार्य करता रहेगा एवं यात्रा पूर्ववत् चलती रहेगी। श्री काशीक्षेत्र पञ्चक्रोशी जीर्णोद्धार समिति के अध्यक्ष श्री राधेश्याम खेमका व मन्त्री श्री रामशरण ने मण्डल की प्रतिवर्ष यात्रा के पूर्व हर विश्रामस्थल की धर्मशालाओं की सफाई सदैव अपने खर्च से कराने का वचन दिया है; मण्डल इनका आभारी है।

मैं उन सभी भक्तों के प्रति, जो यात्रा-व्यवस्था में सेवाभाव से लगे रहते हैं, ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनका सर्वविध कल्याण हो।

विक्रम संवत्, २०५३ | निवेदक
चैत्र कृष्ण २ | **लक्ष्मीनारायण शर्मा**
दिनाङ्क २६ मार्च, १९९७ | मन्त्री

श्री दातार पञ्चक्रोशी मण्डल, वाराणसी

सम्पर्क-सेवा
द्वारा श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा
सी० के० २०/२४, लक्खीचौतरा, वाराणसी
दूरभाष : दूकान ३२०१९३ निवास ३१०६४३

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शुभकामना

श्री दातार पञ्चक्रोशी मण्डल

मण्डल इस वर्ष कौस्तुभ-जयन्ती वर्ष के रूप में मना रहा है जानकर हर्ष हुआ। ७५ वर्षों से निरन्तर चैत्र कृष्ण २ से ६ तक की यात्रा होती आ रही है। यात्रा का प्रारम्भ काशीनिवासी श्रीमद्‌भागवत के मूर्धन्य विद्वान् स्वनामधन्य परमपूज्य प० माधव बालशास्त्री दातारजी के द्वारा किया गया। उनके पश्चात् महामहोपाध्याय प० विश्वनाथ शास्त्री दातारजी महाराज ने अनेक वर्षों तक निरन्तर इसका संचालन किया। सम्प्रति लगभग १५ वर्षों से श्रीमद्‌भागवत व रामायण के ओजस्वी वक्ता श्रद्धेय प० विश्वनाथजी पालन्दे इस परम्परा को अक्षुण्ण बनाये हुए हैं। भगवान् आशुतोष से प्रार्थना है कि उनकी प्रेरणा द्वारा उनकी ही यात्रा से काशीवासी अधिक-से-अधिक संख्या में सहभागी बन पुण्य अर्जित करें।

रामशरण सेठ
मन्त्री

राधेश्याम खेमका
अध्यक्ष

श्री काशीक्षेत्र पञ्चक्रोशी जीर्णोद्धार-समिति

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

॥श्रीः॥

"दोहा"

१. नमो नमो माता - पिता, ये जिनसे भया शरीर ।
नमो नमो गुरुदेव को, दिया भजन में सीर ॥

२. आछी (अच्छी) तो पाछे गई, किया न हरि से हेत ।
फिर पछताये होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत ॥

३. जब तक स्वांस शरीर में, मत बिसरो हरि - नाम ।
न जाने किस नाम से, स्वांस करे विश्राम ॥

४. राम - नाम रटते रहो, जब लगि घट में प्राण ।
कबहुँ तो दीन दयाल के, भनक पड़ेगी कान ॥

५. निदंडली बैरण भई, और नैन बसो नन्दलाल ।
हिचक्यां आवे याद में, मेरी सुध ले लो गोपाल ॥

६. ये काया काचे गारे की, मुख से श्याम बोल ।
प्राण पखेरू उड़ चले, तो माटी का क्या मोल ॥

निवेदन : यह दोहे प्रतिदिन भगवान् के सामने बैठकर प्रार्थना करने से पूर्व अवश्य कहें।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"गुरु-वन्दना"

गुरुजी तुम्हारे दर पे खड़ा हूँ, लाज रखो मेरी शरण पड़ा हूँ ॥टेर॥
तुम हो दया के सागर गुरुजी, प्यार की भर दो गागर गुरुजी ।
आशा की झोली लेकर खड़ा हूँ॥ लाज रखो मेरी शरण पड़ा हूँ ॥१॥
बिना गुरु के कौन ज्ञान सिखावे, बिना गुरु के कौन राह दिखावे ।
गले से लगा लो, चरण पड़ा हूँ॥ लाज रखो मेरी शरण पड़ा हूँ ॥२॥
भीख दया की दे दो गुरुजी, प्रभु से मुझको मिला दो गुरुजी ।
पार करो भव बीच खड़ा हूँ॥ लाज रखो मेरी शरण पड़ा हूँ ॥३॥
भक्त मण्डल धांसू अर्ज गुजारे, जय जय जय गुरुदेव पुकारे ।
दया की नजर तेरी पाने खड़ा हूँ॥ लाज रखो मेरी शरण पड़ा हूँ ॥४॥

"प्रभु-नाम की महिमा"

राम से बड़ा राम का नाम श्याम से बड़ा श्याम का नाम ॥ टेर ॥
सुमरिये राम-नाम बिन देखे, लगे न कौड़ी दाम ।
नाम की डोर से बँध करके, आयेंगे श्रीराम ॥
राम से ... श्री राम जय राम जयजय राम
नामी को चिन्ता यह रहती, नाम न हो बदनाम ।
द्रौपदी ने जब नाम पुकारा, झट आये घनश्याम ॥
राम से ... श्री राम जय राम जयजय राम
बिना सेतु के सागर को भी, लाँघ सके न राम
लाँघ गये हनुमान उसीको, लेके राम का नाम ॥
राम से ... श्री राम जय राम जयजय राम
वो अभिमानी डूब जायेंगे, जिन मुख नहीं है राम ।
वो पत्थर भी तिर जायेंगे, लिखा हो जिस पर राम ॥
राम से ... श्री राम जय राम जयजय राम

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रार्थना

क्या प्रभु तुम भी दोगे सहारा नहीं ।
जब कि दुनिया में कोई हमारा नहीं ॥टेर॥
छोड़कर आज तुमको मैं जाऊँ कहाँ ।
तुमसा सच्चा हितैषी मैं पाऊँ कहाँ ।
पाया दर्शन मैं अब तक तुम्हारा नहीं ॥ जब कि दुनियां में — १॥
मेरे मन में सदा तू ही घनश्याम है ।
मैं जिधर देखता श्याम ही श्याम है ।
सबमें तू तुमसे कोई भी न्यारा नहीं ॥ जब कि दुनिया में — २॥
मैं सुना था बुलाने से आते हो तुम ।
आज मालूम हुआ भूल जाते हो तुम ।
फिर न कहना कि मुझको पुकारा नहीं ॥ जब कि दुनिया में — ३॥
नैन से आँसुओं की नदी बह रही ।
मन की नैया प्रभु आपसे कह रही ।
थाम लो सूझता अब किनारा नहीं ॥ जब कि दुनिया में — ४॥
अब तनिक-सी दया मुझपे कर दो प्रभु ।
हाथ शिर पर मेरे आज धर दो प्रभु ।
"बाबरी" मन तुम्हें कब निहारा नहीं ॥ जब कि दुनिया में — ५॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

॥ॐ श्री विश्वनाथाष्टकम्॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

गङ्गातरङ्गरमणीयजटाकलापं
गौरीनिरन्तरविभूषितवामभागम् ।
नारायणप्रियमनङ्गमदापहारं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥१॥

वाचामगोचरमनेकगुणस्वरूपं
वागीशविष्णुसुरसेवितपादपीठम् ।
वामेन विग्रहवरेण कलत्रवन्तं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥२॥

भूताधिपं भुजगभूषणभूषिताङ्गं
व्याघ्राजिनाम्बरधरं जटिलं त्रिनेत्रम् ।
पाशाङ्कुशाभयवरप्रदशूलपाणिं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥३॥

शीतांशुशोभितकिरीटविराजमानं
भालक्षेणानलविशोषितपञ्चबाणम् ।
नागाधिपारचितभासुरकर्णपूरं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥४॥

पञ्चाननं दुरितमत्तमतङ्गजानां
नागान्तकं दनुजपुङ्गवपन्नगानाम् ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दावानलं मरणशोकजराटवीनां
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥५॥

तेजोमयं सगुणनिर्गुणमद्वितीय-
मानन्दकन्दमपराजितमप्रमेयम् ।
नागात्मकं सकलनिष्कलमात्मरूपं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥६॥

आशां विहाय परिहृत्य परस्य निन्दां
पापे रतिं च सुनिवार्य मनः समाधौ ।
आदाय हृत्कमलमध्यगतं परेशं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥७॥

रागादिदोषरहितं स्वजनानुराग-
वैराग्यशान्तिनिलयं गिरिजासहायम् ।
माधुर्यधैर्यसुभगं गरलाभिरामं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥८॥

वाराणसीपुरपतेः स्तवनं शिवस्य
व्याख्यातमष्टकमिदं पठते मनुष्यः ।
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिं
सम्प्राप्य देहविलयं लभते च मोक्षम् ॥९॥

व्यासाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥१०॥

॥इति श्रीव्यासकृतं विश्वनाथाष्टकं सम्पूर्णम्॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ॐ श्री अन्नपूर्णास्तोत्रम्

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिलघोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी।
प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरि! ॥१॥

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
मुक्ताहारविलम्बमानविलसद्वक्षोजकुम्भान्तरी ।
काश्मीरागुरुवासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरि! ॥२॥

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मार्थनिष्ठाकरी
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी ।
सर्वैश्वर्यसमस्तवाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरि! ॥३॥

कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शङ्करी
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओङ्कारबीजाक्षरी ।
मोक्षद्वारकपाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरि! ॥४॥

दृश्यादृश्यप्रभूतवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपाङ्कुरी ।
श्रीविश्वेशमनःप्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरि! ॥५॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उर्वी सर्वजनेश्वरी भगवती माताऽन्नपूर्णेश्वरी
वेणीनीलसमानकुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी ।
सर्वानन्दकरीदृशां शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरि! ॥६॥

आदिक्षान्तिसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
काश्मीरा त्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्कुरा शर्वरी ।
कामाकाङ्क्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरि! ॥७॥

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी
वामस्वादुपयोधरप्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।
भक्ताभीष्टकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरि! ॥८॥

चन्द्रार्कानलकोटिकोटिसदृशा चन्द्रांशुबिम्बाधरी
चन्द्रार्काग्निसमानकुन्तलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।
मालापुस्तकपाशसाङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरि! ॥९॥

क्षत्रत्राणकरी महाऽभयकरी माता कृपासागरी
साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी ।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरि! ॥१०॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे ।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति! ॥११॥

माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः ।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥१२॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितमन्नपूर्णाष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शिवमानसपूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम् ।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव! दयानिधे! पशुपते! हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥१॥
सौवर्णे मणिरत्नराजिरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम् ।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो! स्वीकुरु॥२॥
छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनके चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकलागीतं च नृत्यं तथा ।
साष्टाङ्गप्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत् समस्तं मया
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो! पूजां गृहाण प्रभो! ॥३॥
आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो! तवाराधनम् ॥४॥
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे! श्री महादेव शम्भो! ॥५॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

षडक्षरशिवस्तोत्रम्

ॐकारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः ॥१॥

नमन्ति ऋषयो देवा नमन्त्यप्सरसां गणाः ।
नरा नमन्ति देवेशं नकाराय नमो नमः ॥२॥

महादेवं महात्मानं महाध्यानपरायणम् ।
महापापहरं देवं मकाराय नमो नमः ॥३॥

शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारकम् ।
शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः ॥४॥

वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम् ।
वामे शक्तिधरं देवं वकाराय नमो नमः ॥५॥

यत्र यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः ।
यो गुरुः सर्वदेवानां यकाराय नमो नमः ॥६॥

षडक्षरमिदं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥७॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

॥ श्रीः ॥

काशी पञ्चक्रोशी-यात्रा

अविमुक्तं महत्क्षेत्रं पञ्चक्रोशपरिस्थितम्।
ज्योतिर्लिङ्गं तदेकं हि ज्ञेयं विश्वेश्वराभिधम्॥ (का० अ० २६)

पञ्चक्रोश परिमाण अविमुक्त काशीनामक महाक्षेत्र को विश्वेश्वर-नामक ज्योतिर्लिङ्ग जानना चाहिए।

इसी पचीस (२५) कोस (५० मील) ज्योतिर्लिङ्गस्वरूप काशी की यात्रा को पञ्चक्रोशी-यात्रा कहते हैं।

काशी का यह क्षेत्र प्रत्येक युग में बदलता रहता है। तदनुसार यात्रा-मार्ग भी बदलता रहता है।

कृते त्रिशूलवद् ज्ञेयं त्रेतायां चक्रवत्तथा।
द्वापरे तु रथाकारं शङ्खाकारं कलौ युगे॥
मुखं शङ्खस्य गङ्गायां पृष्ठं देहलिसन्निधौ।
वामपार्श्वस्थितं तोयं रामाख्यं वारणाभिधम्॥

सत्ययुग में त्रिशूल के रूप में, त्रेता में चक्र के, द्वापर में रथाकार और कलियुग में शंख के रूप में इसकी आकृति होती है।

काशी के मध्यस्थान पर मध्यमेश्वर और पश्चिम द्वार पर देहली विनायक एवं पूर्वद्वार पर आदिकेशव से अस्सी-संगम आधी गंगा तक, दक्षिण द्वार में अस्सी नदी तक, उत्तर में रामेश्वर में वरुणा नदी तक काशीक्षेत्र की सीमा बतायी गयी है।

भगवान् विश्वनाथ ने श्री भवानी को बताया कि जो लोग काशी की पञ्चक्रोशी-प्रदक्षिणा, मार्ग में पड़नेवाले देवी-देवताओं का दर्शन एवं पूजन करते हैं वह मानो सात द्वीप, सात समुद्र, सम्पूर्ण

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पर्वतोंसहित पृथ्वी की परिक्रमा करने का फल प्राप्त करते हैं।

यह यात्रा करनेवाला निष्पाप, पुण्यवान् होकर चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करने से मुक्त हो जाता है और शिव-सायुज्य को प्राप्त होता है।

काशीक्षेत्र की परिक्रमा करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। इस क्षेत्र की महिमा सुनने से अर्थात् काशीखण्ड व काशीरहस्य की कथा सुनने से मनुष्य निष्पाप हो जाता है।

अनेकानेक जन्मों के पाप का नाश पञ्चक्रोशी-यात्रा करने से समाप्त हो जाता है। काशी में निवास करनेवाला, गंगा-स्नान करने-वाला तथा पञ्चक्रोशी की वार्षिक यात्रा करनेवाला व्यक्ति जीवन-मुक्त हो जाता है।

यात्रा पूर्ण कर ज्ञानवापी में बैठकर यात्रा-मार्ग में पड़नेवाले सभी देवों व गणों का नाम-स्मरण कर सङ्कल्प छोड़ा जाता है। ब्राह्मण को सीधा, फल, वस्त्र एवं दक्षिणा देकर तथा साधु व महात्माओं को जलपान या यथासाध्य भोजन कराना चाहिए। यात्रा के बाद श्री कालभैरव का दर्शन तथा साक्षीविनायक का दर्शन करना चाहिए।

काशी में रहते हुए प्रतिदिन मन-वाणी-शरीर से कुछ-न-कुछ पाप होते रहते हैं, उनसे छुटकारा पाने के लिए वर्ष में कम-से-कम एक यह वार्षिक यात्रा अवश्य करनी चाहिए। इसके लिए जब मन में आये तभी यात्रा करनी चाहिए। सुविधा की दृष्टि से अधिकतर लोग मार्गशीर्ष या चैत्र मास में प्रतिवार्षिक-यात्रा करते हैं। भगवान् विश्वनाथ भी प्रतिवर्ष दोनों अयन (उत्तरायण-दक्षिणायन) में यात्रा करते हैं। यह यात्रा पापों को नष्ट करनेवाली होती है। इस यात्रा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

को करने से दुःख व संकट दूर होता है। तीन बार यह यात्रा करने से भक्तों के सौ जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं।

पञ्चक्रोशात्मकं लिङ्गं ज्योतीरूपं सनातनम्।
भवानीशङ्कराभ्यां च लक्ष्मीश्रीविष्णुराजितम् ॥

(का० र० अ० १०)

यह पञ्चक्रोशात्मक लिङ्ग शाश्वत तथा ज्योतिस्वरूप है। इस लिङ्ग भवानी तथा में शिवजी के साथ लक्ष्मी व विष्णु विराजते हैं। जिस प्रकार माता पुत्र का हित करनेवाली होती है उसी भाँति यह काशी मातृवत् सभी जीवों का हित करके उसे सिद्धि एवं मुक्ति प्रदान करती है।

जो लोग पञ्चक्रोशी-यात्रा करने में असमर्थ होते हैं वे किसी यान (सवारी) से यात्रा कर सकते हैं। यदि वह भी संभव न हो सके तो ब्राह्मण को वरणी देकर मात्रा का फल प्राप्त करते हैं। कूर्मपुराण में कहा गया है कि

नरयानं चाधतरी हयादिसहितो रथः ।
तीर्थयात्राह्यशक्तानां यानदोषकरी नहि॥

काशी-पञ्चक्रोशी-यात्रा करने के लिए सुदूर देशों से लोग आते हैं और अपने पापों की मुक्ति के लिए पञ्चक्रोशी-यात्रा करते हैं। प्रति तीन वर्षों में लगनेवाले मलमास (अधिकमास) में गाँव-गिराव तथा देश के कोने-कोने से लाखों की संख्या में पूरे एक महीने लोग आते हैं और पाँच दिनों में इस यात्रा को पूर्ण करते हैं। उस समय हवाई जहाज से देखने पर पूरे पचीस कोस के यात्रा-मार्ग में यात्रा करते हुए नर-मुण्ड ही नर-मुण्ड दिखाई देते हैं। उस समय ऐसा प्रतीत होता है कि मानो पचीस कोस के ज्योतिर्लिङ्ग के चारों ओर मुण्डमाल पहने

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भगवान् शङ्कर ही दिखाई देते हैं। नित्यप्रति ५०-६० हजार लोग ज्ञानवापी में सङ्कल्प कर अपनी यात्रा प्रारम्भ करते हैं।

यात्रा की विधि व पूजन-सामग्री

पञ्चक्रोशी-यात्रा एक दिन, दो दिन, तीन दिन, चार दिन, पाँच दिन, सात दिन या उससे भी अधिक दिनों में लोग पूर्ण करते हैं। सामर्थ्यानुसार अधिकांश इस यात्रा को पाँच दिनों में पूर्ण करते हैं। यात्रा में पाँच मुख्य विश्राम-स्थल हैं– ***१. कर्दमेश्वर, २. भीमचण्डी देवी, ३. रामेश्वर, ४. शिवपुर व ५. कपिलधारा।***

यात्रीगण यात्रा आरम्भ करने के पूर्व दिन श्री ढुण्ढिराज का दर्शन, हविष्यान्न का भोजन करते हैं। दूसरे दिन प्रातः गङ्गा-स्नान कर विश्वनाथ, अन्नपूर्णा, दण्डपाणि आदि का दर्शन-पूजन कर ज्ञानवापी के प्राङ्गण में आते हैं। वहीं मुक्ति-मण्डप में बैठकर पञ्चक्रोशी-यात्रा का सङ्कल्प कर मौन होकर मणिकर्णिका आते हैं। वहाँ मणिकर्णिका-तीर्थ व गङ्गाजी में स्नान या मार्जन कर मौन भंग कर अस्सी-सङ्गम तक पैदल या नौका से यात्रा करते हैं। मार्ग में दाहिनी ओर पड़नेवाले देवी-देवता का दर्शन, पूजन अथवा नामस्मरण करते हुए अस्सी-सङ्गम पर स्नान-मार्जन कर सङ्गमेश्वर का दर्शन कर वहीं पर दुर्गादेवी, दुर्गाकुण्ड, दुर्गविनायक आदि का नामस्मरण कर नगवा विश्वविद्यालय गेट होते हुए कर्दमेश्वर प्रथम पड़ाव की ओर चलते हैं। मार्ग में विश्वक्सेनेश्वर मिलते हैं। यह स्नान-मार्ग में दाहिने भीतर पड़ता है अतः लोग मार्ग में ही नामस्मरण कर कँदवाँ पहुँचते हैं। यहाँ १० बड़ी धर्मशालाएँ बायीं ओर हैं। कर्दमतीर्थ (बड़ा तालाब) में स्नान कर श्री कर्दम प्रजापति द्वारा स्थापित भगवान् कर्दमेश्वर का पूजन कर धर्मशाला में विश्राम, भोजन इत्यादि करते

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हैं। प्रथम बार यात्रा करनेवाला यहाँ पर फलाहार करता है। भजन-कीर्तन, कथा-श्रवण आदि का कार्य पाँचों विश्राम-स्थलों पर होता है। यहाँ ६ देवी-देवता हैं। दूसरे दिन प्रातः स्नान कर भगवान् कर्दमेश्वर का पूजन कर पुनर्दर्शन के लिए आज्ञा लेकर भीमचण्डी (१० मील) की यात्रा प्रारम्भ होती है। मार्ग में १६ देवी-देवता सीमा के किनारे दाहिनी ओर पड़ते हैं। भीमचण्डी स्थान में ८ धर्मशालाएँ हैं व ६ देवी-देवता हैं व एक गन्धर्वसागर तीर्थ है जिसमें स्नान कर देवी का पूजन किया जाता है। बायीं ओर धर्मशाला में निवास, भोजन, कथा-श्रवण कर पुनः प्रातः स्नान कर देवी का पूजन कर पुनर्दर्शन की आज्ञा लेकर रामेश्वर (१४ मील) की यात्रा प्रारम्भ होती है। इस मार्ग में २६ देवी-देवता मार्ग के दाहिनी ओर एवं रामेश्वर मन्दिर में पड़ते हैं। यहाँ वरुणा नदी में स्नान, रामेश्वर का पूजन कर ८ धर्मशालाओं में रात्रि-निवास आदि पूर्व दिनों के अनुसार करते हैं। पुनः प्रातः स्नान कर रामेश्वर का पूजन कर दुबारा दर्शन की आज्ञा लेकर ८.५ मील की शिवपुर की यात्रा करते हैं।

भगवान् श्री राम ने त्रेतायुग में पञ्चक्रोशी-यात्रा के समय यहाँ शिवलिङ्ग की स्थापना कर पूजन किया है अतः इसका नाम रामेश्वर पड़ा।

रामेश्वर व शिवपुर के बीच देवसध्येश्वर पड़ते हैं। शिवपुर में द्रौपदीकुण्ड एवं पञ्चपाण्डव के द्वारा स्थापित शिवलिङ्ग का दर्शन-पूजन कर यात्रीगण चौथे दिन धर्मशाला में विश्राम करते हैं। शिवपुर में विश्राम करने के बारे में काशी-रहस्य में यहाँ पर विश्राम करने की परम्परा नहीं मिलती है अर्थात् पहले यहाँ विश्राम नहीं होता था, किन्तु कलियुग में मनुष्य की शक्ति के अनुसार यहाँ विश्राम की

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

व्यवस्था शिष्टजनों ने की है। एक प्रमाण यह मिलता है कि पाण्डवों ने यात्रा के समय यहाँ विश्राम किया था क्योंकि यहाँ स्थापित पञ्च-पाण्डव के लिङ्ग इस बात का प्रतीक है। यात्री लोग रामेश्वर से सीधे कपिलधारा में अत्यधिक दूरी की वजह से चलने में असमर्थ होते हैं अतः यहाँ रुकते हैं व इन देवी-देवताओं का पूजन-दर्शन करते हैं। तभी से यहाँ विश्राम की परम्परा चली है। दूसरे दिन प्रातः कपिलधारा के लिए प्रस्थान करते हैं। यह मार्ग ९ मील का है।

मार्ग में पाशपाणिविनायक व पृथ्वीश्वर का मन्दिर सीमा से भीतर पड़ते हैं अतः नाम-स्मरण कर यात्री आगे बढ़ते हैं। कुछ लोग अन्दर जाकर दर्शन-पूजन करते हैं। मार्ग में यूपसरोवर तीर्थ में मार्जन कर स्वर्णदान कर वृषभध्वजेश्वर (कपिलधारा) पहुँचते हैं। यहाँ भगवान् के आगे शिवगया-तीर्थ है। इस तीर्थ में स्नान, पितरों के निमित्त पिण्डदान, ब्राह्मण-भोजन आदि करने का विधान है। स्नान, दर्शन, पूजन कर, रात्रि-निवास कर पुनः दर्शन की आज्ञा लेकर आदिकेशव होते हुए मणिकर्णिका से ज्ञानवापी जाया जाता है। इस मार्ग में २१ देवी-देवताओं का दर्शन-पूजन होता है। ज्ञानवापी में यात्रा-समाप्ति का सङ्कल्प कर फल-श्रुति मुक्तिमण्डप में सुनकर काल-भैरव का दर्शन कर लोग घर जाते हैं।

यात्रा-समाप्ति के समय मुक्तिमण्डप में सभी (१११) देवताओं का नाम-स्मरण किया जाता है।

एक दिन की यात्रा में रामेश्वर में विश्राम किया जाता है। दो दिन की यात्रा में भीमचण्डी व रामेश्वर, तीन दिन की यात्रा में भीमचण्डी, रामेश्वर, कपिलधारा, चार दिन की यात्रा में कर्दमेश्वर, भीमचण्डी, रामेश्वर, कपिलधारा और पाँच दिन की यात्रा में शिवपुर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चौथे दिन का विश्राम बढ़ जाता है। यात्रा में पूजन-सामग्री में गङ्गाजल, बिल्वपत्र, माला, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, यज्ञोपवीत, कपूर आदि रहता है। भीमचण्डी के लिए चुनरी या साड़ी व नारियल, देहलीविनायक (भीमचण्डी से रामेश्वर-मार्ग में) के लिए दूर्वा, लड्डू, ईख। रामेश्वर में सफेद तिल व विशेष रूप से तुलसी चढ़ती है। भीमचण्डी में दुर्गापाठ व अन्य स्थानों में रुद्राभिषेक का भी आयोजन होता है। यात्रा-मार्गभर लोग 'हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गङ्गे' का भजन करते चलते हैं।

यात्रा के मार्ग में या विश्राम-स्थलों पर मार्ग में बायीं ओर नित्यकर्म, थूकना, खाना-पीना करने का विधान है क्योंकि दाहिनी ओर का मार्ग ज्योतिर्लिङ्ग मानकर उसकी परिक्रमा की जाती है। यात्रा-मार्ग में पड़नेवाले देवी-देवता व गणों के मन्दिर इस प्रकार दृष्टिगोचर होते हैं जैसे सीमा पर सेना की चौकी या पुलिस की चौकी स्थित हो।

ये देवी-देवता आधिव्याधि से क्षेत्र की रक्षा करते हैं। अतः वर्ष में एक बार हम इनका पूजन कर उनके आशीर्वाद के भागी बनते हैं और वे हमारी सहायता अपरोक्ष रूप से करते हैं।

पञ्चक्रोशी की यात्रा गृहस्थ, आबालवृद्ध सन्त-महात्मा, मण्डलेश्वर, संन्यासी, राजा व गरीब सभी को करने का विधान है। बिना भेद-भाव के सभी पापमुक्त होते हैं तथा निष्पाप हो पुनः पाप न करते हुए मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

मृत्युलोक में काशी की पञ्चक्रोशी-यात्रा बड़ा भाग्य उदय होने पर ही लोगों को प्राप्त होती है। ●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पञ्चक्रोशी-यात्रा के प्रारम्भ से समाप्ति तक पड़नेवाले देवताओं का क्रमशः विवरण

देवताओं के नाम		स्थान-विवरण
१. दण्डपाणिभ्यो नमः	-	सी० के० ३६/११ ढुण्ढिराज गली
२. ढुण्ढिराजाय नमः	-	सी० के० ३५/२७ अन्नपूर्णा गली
३. पञ्चविनायकाय नमः	-	सी० के० ३५/२१ विश्वनाथ सभामण्डप
४. श्री विश्वनाथाय नमः	-	मन्दिर सी० के० ३५/१९
५. मुक्तिमण्डपज्ञानवापीतीर्थाय नमः		
६. मणिकर्णिकातीर्थाय नमः		
७. मणिकर्णिकेश्वराय नमः	-	सी० के० ८/१२ मु० गढवासी टोला
८. सिद्धिविनायकाय नमः	-	डी० १/६७ मणिकर्णिका घाट
९. गङ्गाकेशवविष्णवे नमः	-	डी० १/६६ ललिताघाट
१०. ललितागौरीदेव्यै नमः	-	डी० १/६७ ललिताघाट
११. जरासन्धेश्वराय नमः	-	डी० ५/१० भैरवी घाट
१२. सोमनाथेश्वराय नमः	-	डी० १६/३४ मानमन्दिर घाट
१३. दालभ्येश्वराय नमः	-	डी० १६/३२ मानमन्दिर घाट
१४. शूलटङ्केश्वराय नमः	-	दशाश्वमेध घाट
१५. आदिवाराहेश्वराय नमः	-	डी० १६/१११ दशाश्वमेध घाट
१६. बन्दीदेव्यै नमः	-	डी० १७/१०० प्रयागराज घाट
१७. दशाश्वमेधेश्वराय नमः	-	डी० १८/१९ प्रयाग घाट
१८. सर्वेश्वराय नमः	-	डी० २५/७ पाण्डेय घाट
१९. केदारेश्वराय नमः	-	बी० ६/१०२ केदारघाट
२०. हनुमदीश्वराय नमः	-	बी० ४/११
२१. अर्कविनायकाय नमः	-	बी० २/१७ लोलार्ककुण्ड
२२. लोलार्कसूर्याय नमः	-	बी० २/३१ ए
२३. असीसङ्गमेश्वराय नमः	-	बी० १/१७४ अस्सीघाट

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

२४. दुर्गविनायकाय नमः - बी० २७/२ दुर्गाकुण्ड
२५. दुर्गादेव्यै नमः - ,,

जय दुर्गे! महादेवि! जय काशिनिवासिनि!
क्षेत्रविघ्नहरे! देवि! पुनर्दर्शनमस्तु ते॥

२६. विश्वक्सेनेश्वराय नमः - करमैतापुर गाँव में
२७. आदिकर्दमेश्वराय नमः - कँदवाँ गाँव में
२८. सोमनाथेश्वराय नमः - ,,
२९. विरूपाक्षगणाय नमः - ,,
३०. नीलकण्ठेश्वराय नमः - ,,
३१.. कर्दमेश्वराय नमः - ,,

कर्दमेश! महादेव! काशिवासिजनप्रिय!
त्वत्पूजनान्महादेव! पुनर्दर्शनमस्तु ते॥

३२. नागनाथेश्वराय नमः - अमरा गाँव में
३३. चामुण्डादेव्यै नमः - अबड़े गाँव में
३४. मोक्षेश्वराय नमः - ,,
३५. करुणेश्वराय नमः - ,,
३६. वीरभद्रेश्वरगणाय नमः - देलहना गाँव में
३७. विकटाक्षदुर्गादेव्यै नमः - ,,
३८. उन्मत्तभैरवाय नमः - देउरा गाँव में
३९. कालकूटगणाय नमः - ,,
४०. विमलादुर्गादेव्यै नमः - ,,
४१. महादेवेश्वराय नमः - ,,
४२. नन्दिकेश्वराय नमः - ,,
४३. भृङ्गि-रिटिगणाय नमः - ,,
४४. गणप्रियेश्वरराय नमः - ,,
४५. विरूपाक्षगणाय नमः - गौरा गाँव में
४६. यज्ञेश्वराय नमः - चक्कमातलदेई

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

४७. विमलेश्वराय नमः - पयागपुर में
४८. मोक्षदेश्वराय नमः - ,,
४९. ज्ञानदेश्वराय नमः - ,,
५०. अमृतेश्वराय नमः - असवारी गाँव में
५१. गन्धर्वसागरतीर्थाय नमः - भीमचण्डी (गाँव) बालापोखरा
५२. नरकार्णवतारणशिवाय नमः - ,,
५३. गन्धर्वेश्वराय नमः - ,,
५४. भीमचण्डविनायकाय नमः - ,,
५५. रविरक्ताक्षगन्धर्वाय नमः - ,,
५६. भीमचण्डीदेव्यै नमः - ,,

भीमचण्डि! प्रचण्डानि! मम विघ्नान् विनाशय ।
नमस्तेऽस्तु, गमिष्यामि, पुनर्दर्शनमस्तु ते ॥
भीमचण्डि! महादेवि! सर्वराक्षसभक्षिणि! ।
मुनित्राणकरे देवि! नमस्तेऽस्तु पुनः पुनः ॥

५७. एकपादशिवगणाय नमः - कचनार गाँव में
५८. महाभीमगणाय नमः - हरैंका तालाब (हरपुर गाँव)
५९. भैरवनाथाय नमः - हरसोस गाँव
६०. भैरवीदेव्यै नमः - ,,
६१. भूतनाथेश्वराय नमः - दीनदासपुरा
६२. सोमनाथतीर्थाय नमः - प्रसिद्ध (लँगोटिया हनुमान्जी)
६३. सोमनाथेश्वराय नमः - ,,
६४. कालनाथेश्वराय नमः - जनसा गाँव
६५. कपर्दीश्वराय नमः - ,,
६६. कामेश्वराय नमः - चौखण्डी गाँव
६७. गणेश्वराय नमः - ,,
६८. वीरभद्रशिवगणाय नमः - ,,
६९. चारुमुखशिवगणाय नमः - ,,
७०. गणनाथेश्वराय नमः - भटौली गाँव

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

७१.	देहलीविनायकाय नमः (षोडशविनायक)	-	प्रसिद्ध है
७२.	उद्दण्डविनायकाय नमः	-	मुइली गाँव में
७३.	उत्कलेश्वराय नमः	-	हीरामपुर गाँव में
७४.	रुद्राणीदेव्यै नमः	-	आगे मार्ग में
७५.	रामेश्वरतीर्थाय नमः	-	रामेश्वर गाँव में
७६.	सोमेश्वराय नमः	-	,,
७७.	भरतेश्वराय नमः	-	,,
७८.	लक्ष्मणेश्वराय नमः	-	,,
७९.	शत्रुघ्नेश्वराय नमः	-	,,
८०.	द्यावाभूमीश्वराय नमः	-	,,
८१.	नहुषेश्वराय नमः	-	,,
८२.	रामेश्वराय नमः	-	,,

श्री रामेश्वर! रामेण पूजितस्त्वे सनातन ।
आज्ञान्देहि महादेव! पुनर्दर्शनमोस्तु ते ॥

८३.	असंख्यातशिवलिङ्गेश्वराय नमः		
८४.	देवसन्ध्येश्वराय नमः	-	(शिवपुर में)
८५.	द्रौपदीदेव्यै नमः	-	,,
८६.	द्रौपदीश्वराय नमः	-	,,
८७.	युधिष्ठिरेश्वराय नमः	-	,,
८८.	भीमेश्वराय नमः	-	,,
८९.	अर्जुनेश्वराय नमः	-	,,
९०.	नकुलेश्वराय नमः	-	,,
९१.	सहदेवेश्वराय नमः	-	,,
९२.	कृष्णेश्वराय नमः	-	,,
९३.	परीक्षितेश्वराय नमः	-	,,
९४.	कुन्तीश्वराय नमः	-	,,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

९५.	पाशपाणिविनायकाय नमः	-	सदरबाजार (रेलवे लाइन) के पास
९६.	पृथिवीश्वराय नमः	-	खजुरी गाँव में
९७.	स्वर्गभूमिदेव्यै नमः	-	सारंग तालाब

स्वर्गभूमिस्तु सा ज्ञेया मोक्षभूमिस्तु मध्यतः ।
काश्याश्चतुर्दिशं देवि! योजनं स्वर्गभूमिका ॥

९८.	यूपसरोवरतीर्थाय नमः	-	दीनदयालपुरा में
९९.	यूपसरोवरेश्वराय नमः	-	कपिलधारा
१००.	शिवगयातीर्थाय नमः	-	,,
१०१.	वृषभध्वजेश्वराय नमः	-	,,

वृषभध्वजः देवेशः पितृणाम्मुक्तिदायकः ।
आज्ञान्देहि महादेवः पुनर्दर्शनमोस्तु ते ॥

१०२.	ज्वालानृसिंहाय नमः	-	कोटवाँ गाँव
१०३.	वरुणा-गङ्गासङ्गमतीर्थाय नमः	-	
१०४.	वरुणा-गङ्गासङ्गमेश्वराय नमः	-	
१०५.	आदिकेशवविष्णवे नमः	-	वरुणा-सङ्गम के पास
१०६.	जवखर्वविनायकाय नमः	-	आदिकेशव के नीचे
१०७.	प्रह्लादेश्वराय नमः	-	प्रह्लादघाट
१०८.	त्रिलोचनेश्वराय नमः	-	त्रिलोचनघाट
१०९.	बिन्दुमाधवविष्णवे नमः	-	बेनीमाधव
११०.	गभस्तीश्वराय नमः	-	बालाघाट
१११.	मङ्गलागौरीदेव्यै नमः	-	,,
११२.	वशिष्ठेश्वराय नमः	-	संकटाघाट
११३.	वामदेवेश्वराय नमः	-	,,
११४.	पर्वतेश्वराय नमः	-	आत्मावीरेश्वर के समीप
११५.	महेश्वराय नमः	-	मणिकर्णिका घाट
११६.	सिद्धिविनायकाय नमः	-	,,
११७.	सप्तावरणविनायकाय नमः	-	ब्रह्मनाल (जवविनायक)
११८.	विष्णवे नमः	-	ज्ञानवापी
११९.	साक्षीविनायकाय नमः	-	विश्वनाथ गली
१२०.	द्रौपदीआदित्यसूर्याय नमः	-	
१२१.	विश्वनाथाय नमः	-	प्रसिद्ध मन्दिर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

।।पापनाशनस्तोत्रम्।।

।।नास्ति मूलं कुतः शाखा।।

जब मूल ही नहीं तो शाखा कहाँ से हो सकती है। इसलिए इन श्लोकों का पाठ करना आवश्यक है।

परदारपरद्रव्यजीवहिंसादिके यदा ।
प्रवर्तते नृणां चित्तं प्रायश्चित्तं स्तुतिस्तदा ।।१।।

जब मनुष्यों का मन पर-स्त्री, पर-धन, जीव-हिंसा आदि पापों में प्रवृत्त होता है तब उसके लिए परमात्मा की स्तुति ही उपयुक्त प्रायश्चित्त है।।१।।

विष्णवे विष्णवे नित्यं विष्णवे विष्णवे नमः ।
नमामि विष्णुं चित्तस्थमहङ्काराश्रयं हरिम् ।।२।।

प्रायश्चित्त इसलिए प्रायश्चित्तरूप में भगवान् विष्णु के लिए सदा मेरा प्रणाम ४ बार कहना। चित्त में स्थित अहंकार को आश्रयभूत व्यापकविष्णुरूप श्री हरि को प्रणाम करता हूँ।।२।।

चित्तस्थमीशमव्यक्तमनन्तमपराजितम् ।
विष्णुमीड्यमशेषेण अनादिनिधनं विभुम्।।३।।

मैं चित्त में स्थित ईश्वर अव्यक्त, अनन्त, अपराजित सभी के द्वारा स्तुति के योग्य आदि तथा अन्त से रहित व्यापक विष्णु को प्रणाम करता हूँ।।३।।

विष्णुश्चित्तगतो यन्मे विष्णुर्बुद्धिगतश्च यत्।
यच्चाहङ्कारगोविष्णुर्यद्विष्णुर्मयि संस्थितः ।।४।।

विष्णु मेरे चित्त में स्थित हैं, विष्णु मेरी बुद्धि में स्थित हैं, विष्णु मेरे अहंकार में स्थित हैं और विष्णु मेरे स्वरूप में स्थित

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हैं॥४॥

करोति कर्मभूतोऽसौ स्थावरस्य चरस्य च ।
तत् पापन्नाशमायातु तस्मिन्नेव हि चिन्तिते ॥५॥

स्थावर तथा जंगम संसार के कर्मरूप से स्थित व सभी कर्म करते हैं इसलिए उन्हींका चिन्तन करने पर मेरा सम्पूर्ण पाप नाश को प्राप्त हो॥५॥

ध्यातो हरति यत् पापं स्वप्ने दृष्टस्तु भावनात् ।
तमुपेन्द्रमहं विष्णुं प्रणतार्तिहरं हरिम् ॥६॥

ध्यान किये जाने पर जो भगवान् पाप का नाश करते हैं उन उपेन्द्रस्वरूप शरणागत, पीड़ानाशक, विष्णुस्वरूप दृष्टि को मैं प्रणाम करता हूँ॥६॥

जगत्यस्मिन्निराधारे मज्जमाने तमस्य यः ।
हस्तावलम्बनं विष्णुं प्रणमामि परात् परम् ॥७॥

मैं इस निराधार अज्ञानमय संसार में नीचे की ओर डूबता जा रहा हूँ, इसलिए अपने हाथों का सहारा देनेवाले परात्पर विष्णु को मैं प्रणाम करता हूँ॥७॥

सर्वेश्वरेश्वर विभो परमात्मन्नधोक्षज ।
हृषीकेश हृषीकेश हृषीकेश नमोऽस्तु ते ॥८॥

हे सभी ईश्वरों के ईश्वर, हे विष्णो, हे परमात्मा, हे अधोक्षज, हे हृषीकेश, आपको मेरा प्रणाम हो॥८॥

नृसिंहानन्त गोविन्द भूतभावन केशव ।
दुरुक्तं दुष्कृतं ध्यातं शमयाथ नमोऽस्तु ते ॥९॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हे नरसिंह, हे अनन्त, हे गोविन्द, हे भूतभावन, हे केशव, मैंने जो कुछ भी खराब वाणी से पाप किया है, दुष्कर्म से पाप किया है, मन में खराब विचार करके पाप किया है, उन सारे पापों को आप नष्ट कीजिये, आपको मेरा प्रणाम है॥९॥

यन्मया चिन्तितं दुष्टं स्वचित्तवशवर्तिना ।
अकार्यं महदत्युग्रं तच्छमं नय केशव ॥१०॥

हे केशव, अपने चित्त के अधीन रहनेवाले मेरे द्वारा जो दुष्ट विचार किया गया है और जो अत्यन्त उग्र अनुचित कार्य किया गया है वह सब आप नष्ट करें ॥१०॥

ब्रह्मण्यदेव गोविन्द परमार्थपरायण ।
जगन्नाथ जगद्धातः पापं प्रशमयाच्युत ॥११॥

हे ब्रह्मदेव, हे गोविन्द, हे परमार्थपरायण, हे जगन्नाथ, हे जगद्धाता, हे अच्युत, आप मेरे पाप को नष्ट करें॥११॥

यथा पराह्णे सायाह्ने मध्याह्ने च तथा निशि ।
कायेन मनसा वाचा कृतं पापमजानता ॥१२॥

मैंने जो कुछ पाप प्रातःकाल, सायंकाल, मध्याह्नकाल तथा रात्रिकाल में शरीर से, मन से अथवा वाणी से बिना जाने किया है॥१२॥

जानता च हृषीकेश पुण्डरीकाक्ष माधव ।
नामत्रयोच्चारणतः पापं यातु मम क्षयम् ॥१३॥

अथवा जानकर किया है, हे हृषीकेश, हे पुण्डरीकाक्ष, हे माधव, आपके इन तीन नाम के उच्चारण से मेरा वह सब पाप नाश को प्राप्त हो॥१३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शारीरं मे हृषीकेश पुण्डरीकाक्ष माधव ।
पापं प्रशमयाद्य त्वं वाक्कृतं मम माधव ॥१४॥

हे हृषीकेश, हे पुण्डरीकाक्ष, हे माधव, आप मेरे आज तक के शरीर से किये गये पाप का नाश करें, हे माधव, आप मेरी वाणी से किये गये पाप का नाश करें॥१४॥

यद् भुञ्जन् यत् स्वपंस्तिष्ठन् गच्छन् जाग्रद्यदा स्थितः ।
कृतवान् पापमद्याहं कायेन मनसा गिरा ॥१५॥

यदि मैंने आज तक खाते हुए, सोते हुए, खड़े, चलते हुए, जागते हुए अथवा बैठे हुए जो पाप शरीर से, मन से और वाणी से किया है॥१५॥

यत् स्वल्पमपि यत् स्थूलं कुयोनिनरकावहम् ।
तद्यातु प्रशमं सर्वं वासुदेवानुकीर्तनात् ॥१६॥

जो मेरा छोटा भी पाप है, जो मेरा बड़ा भी पाप है, जो मुझे खराब देह में डालनेवाला और नरक में डालनेवाला पाप है वह सब पाप भगवान् वासुदेव के नाम-कीर्तन से नाश को प्राप्त हो॥१६॥

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं च यत् ।
तस्मिन्प्रकीर्तिते विष्णौ यत् पापं तत् प्रणश्यतु ॥१७॥

जो भगवान् विष्णु परब्रह्म है, जो विष्णु परमधाम है और परम पवित्र है उन भगवान् विष्णु का कीर्तन करने पर वह सब पाप नष्ट हो॥१७॥

यत् प्राप्य न निवर्तन्ते गन्धस्पर्शादिवर्जितम् ।
सूरयस्तत्पदं विष्णोस्तत्सर्वशमयत्वघम् ॥१८॥

ज्ञानी लोग भगवान् विष्णु के जिस गन्ध, स्पर्श आदि से

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रहित पद को प्राप्त कर वापस नहीं लौटते भगवान् विष्णु वह पद मेरे सम्पूर्ण पाप को नष्ट करें॥१८॥

पापप्रणाशनं स्तोत्रं यः पठेच्छृणुयादपि ।
शारीरैर्मानसैर्वाग्जैः कृतैः पापैः प्रमुच्यते ॥१९॥

जो मनुष्य इस पापप्रणाशनस्तोत्र को पढ़ता है अथवा सुनता भी है वह शारीरिक, मानसिक, वाचिक पापों से मुक्त होता है॥१९॥

सर्वपापग्रहादिभ्यो याति विष्णोः परं पदम् ।
तस्मात् पापे कृते जप्यं स्तोत्रं सर्वाघमर्दनम्॥२०॥

वह सभी पापग्रहों के आदि से भी मुक्त होकर भगवान् विष्णु के परमपद को जाता है, इसलिए कोई भी पाप किये जाने पर सर्वपापनाशकस्तोत्र का पाठ करना चाहिए॥२०॥

प्रायश्चित्तमघौघानां स्तोत्रं व्रतकृते वरम् ।
प्रायश्चित्तैः स्तोत्रजपैर्व्रतैर्नश्यति पातकम् ॥२१॥

पापों के समूहों का प्रायश्चित्त यह स्तोत्र किये गये व्रतों से भी श्रेष्ठ है, किया गया पाप प्रायश्चित्तों से, स्तोत्र से , जपों से और व्रतों से नष्ट होता है॥२१॥

ततः कार्याणि संसिद्ध्यै तानि वै भुक्तिमुक्तये॥२२॥

इसलिए पूर्ण सिद्धि के लिए प्रायश्चित्त आदि करने चाहिए। वे भोग और मोक्ष के लिए होते हैं॥२२॥

इत्याग्नेय्ये महापुराणे सर्वपापप्रायश्चित्तये पापनाशनस्तोत्रं नाम द्विसप्तत्यधिकशततमोध्यायः॥१७२॥

॥श्रीकृष्णार्पितमस्तु॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पञ्चक्रोशी-यात्रा-सम्बन्धी पूजन-सामग्री

रोली, मोली (नारा), अबीरबुक्का, धूपबत्ती, दीपबत्ती, नैवेद्य, फल, प्रसाद (भोग), पान, सुपारी १५, जनेऊ ७, गंगाजल, चावल, फूल-माला, बिल्वपत्र, वस्त्र (गमछा इत्यादि)

विशेष पूजन-सामग्री एवं पूजा

- कर्दमेश्वर - कर्दमकूप पर सप्तधान चढ़ाया जाता है।
- भीमचंडी (भीमचंडी देवी के पूजन में) नारियल, सुहागपिटारी, चुनरी या साड़ी-ब्लाऊज
- एकपादगण - सफेद तिल या लड्डू का भोग लगावें।
- लँगोटिया हनुमान्‌जी - लाल वस्त्र, लड्डू का भोग।
- देहलीविनायक - सिन्दूर, घृत, जनेऊ, लड्डू का भोग एवं इसी मंदिर की परिक्रमा में षोडशविनायक (१६ गणेशजी है) इनको रेवड़ी-उख का भोग लगाया जाता है।
- रामेश्वर - रामेश्वर में शंकर भगवान् की पूजा में सफेद तिल चढ़ाया जाता है।
- कपिलधारा - कपिलधारा में (सरोवर पर) श्राद्ध-पिण्डदान, तर्पण करने का विधान है।

  यहाँ समिति द्वारा भंडारा सभी यात्रियों के अनुदान से (ब्राह्मण भोजन) वहाँ के आसपास के ब्राह्मणों को प्रतिवर्ष कराया जाता है एवं वसन्तपूजा का आयोजन होता है। काशी के विद्वान्

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पंडित २० से २५ आते हैं। उनको समिति द्वारामाल्यार्पण, चन्दन, दक्षिणा देकर आशीर्वाद प्राप्त किया जाता है एवं सभी यात्री श्रद्धानुसार दक्षिणा-वस्त्र उन्हें भेंट देकर आशीर्वाद लेते हैं।

वरुणा-संगम के पास आदिकेशव का मंदिर है। इस मंदिर के पीछे खर्वविनायक का मंदिर है। वहाँ जौ चढ़ाकर पूरे मार्ग में जौ छिड़कते हुए (भगवान्-विष्णु का नामस्मरण करते हुए) मणिकर्णिका घाट से आगे सप्तावरणविनायक (जौविनायक नाम से प्रसिद्ध) मंदिर है, वहाँ बचे हुए सारे जौ चढ़ाने का विधान है।

सभी देवताओं का पूजन-दर्शन करते हुए साक्षीविनायक, काल-भैरव, अन्नपूर्णाजी, विश्वनाथ जी का दर्शन पूजन करके ज्ञानवापी मंडप में यात्रा-समापन का संकल्प छोड़कर अपने-अपने निवास पर जायँ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री दातार पञ्चक्रोशी मंडल, वाराणसी
७५वें-कौस्तुभ-जयन्ती वर्ष के अवसर पर
श्री काशी पञ्चक्रोशी देवयात्रा का यह पुष्प समर्पित
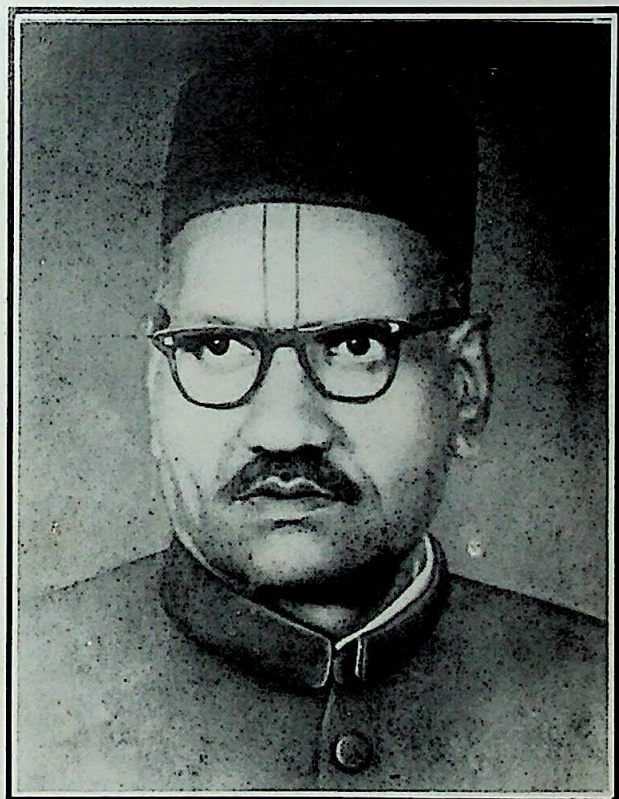
स्व० गौरीशंकरजी सर्राफ

पूज्य पिताजी की स्मृति में
रामजीवन ▫ लक्ष्मीनारायन ▫ भरतकुमार सर्राफ
वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi